Since March 2002
A National, Registered, Peer Reviewed & Refereed Monthly Journal
History
Research Link - 175, Vol - XVII (8), October - 2018, Page No. 93-94
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2015 - 2.782

# ब्रिटिशकालीन बस्तर में जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षा विकास : एक ऐतिहासिक पुनरावलोकन (1865-1947)

*प्रस्तुत शोधपत्र में ब्रिटिशकालीन बस्तर में जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षा के विकास का ऐतिहासिक अध्ययन किया गया है। ब्रिटिशकालीन युग के ताज प्रशासन युग ( 1858-1947 ) के अधीन बस्तर में आठ जमीदारियां थी। जमीदारी होते हुए भी बस्तर का राजा ( राज जमीदार ) स्वतंत्र प्राय ही था, क्योंकि दुर्गम इलाके में उसे प्रत्यक्ष नियंत्रण करने वाला कोई भी वहां जा नहीं पाता था व मृत्युदण्ड के अधिकारी का भी यदा-कदा निर्बाध प्रयोग करता था एवं जनजातीय समाज में अंधविश्वास का प्रचलन था, जहां आधुनिक शिक्षा का कोई प्रत्यक्ष प्रबंध नहीं था। प्रायः राजा तथा सभी लोग जनजातीय माझी, मुरिये और मालगुजार अशिक्षित ही होते थे। सन् 1872 ईस्वीं के बाद स्कूलों का खोला जाना स्कूल भवन, सड़क तथा मैदान के नाम पर जनजातियों की बसी बसाई घोटुल, झोपड़ी एवं पशुशाला या बाड़े को उजाड़ना और मानसिक यातना देकर बेगार वसूली उसका कारण था। वस्तुतः औपनिवेशिक शिक्षा नीति तथा रियासती सामंती प्रवृत्ति के साये में भी सन् 1886 ईस्वी शिक्षा का अत्यंत शनैः शनैः विकास हुआ, जिसके फलस्वरुप 20 वीं सदी के पूर्णार्द्धकाल में बस्तर रियासत में लोग जागरण एवं इस लोक जागरण के कारण स्कूली शिक्षा एवं शिक्षण दोनों का साथ-साथ विकास हुआ।*

**डॉ.चेतन राम पटेल* एवं पुष्पा खिलाड़ी****

**शो**ध प्रविधि :

इस शोध आलेख को निर्धारित करने का लक्ष्यगत अभीष्ट इतिहास की सूक्ष्म क्षेत्रीय ऐतिहासिक अनुसंधान वृत्तियों को नवीनतम पुर्नव्याख्या के साथ प्रस्तुत करना है। जिसमें साबार्ल्टन इतिहास की विश्लेषण पद्धति एवं प्रविधि का अद्यतन अनुसरण किया गया है।

**उद्देश्य :**

प्रस्तुत शोध आलेख की संकल्पना में निहित उद्देश्य प्रमुख रहा है कि औप निवेशिक संरक्षण में विद्यमान सामंतीय राज्य बस्तर में शिक्षा के प्रसार के लिए उत्तरदायी ऐतिहासिक परिस्थितियों में जनजाति समुदाय की एवं यर्थात् की वैकासित धाराओं को सुस्पष्ट प्रकट करना है। जिससे बस्तर के शिक्षा विकास का तत्कालीन युग में सही मूल्यांकन प्रस्तुत हो सके।

**पूर्वर्तीय अध्ययन :**

रियासत कालीन अध्ययनों में शिक्षा विकास पर ब्रिटिश प्रशासकों के गजेटियर एवं प्रतिवेदनों विशेषकर ब्रेट, 1909, ग्रिप्सन (1932) तथा वेरियर ऐल्विन (1939) के अध्ययनों का अध्ययन किया गया हैं, तथा स्वाधीतना पश्चात रायपुर जिला गजेटियर (1978) बस्तर जिला गजेटियर (1999) का अध्ययन के अतिरिक्त एम.एम. जोशी (संयुक्ता सेन गुप्ता) चन्द्रमोहन पालीवाल तथा नंदिनी सुन्दर एवं डॉ. के.के. अग्रवाल के अध्ययनों का भी अवलंबन किया गया है।

किन्तु मूल तथ्यान्वेषण में जगदलपुर कलेक्ट्रेट के रियासत कालीन के रिकार्ड जो सतपुड़ा भवन भोपाल में अभिलेखागार में संग्रहित हैं। उन से प्राप्त मूल सामग्री संकलित कर विश्लेषण किया गया है।

**मुख्य भाग :**

बस्तर रियासत में अंग्रेजी शिक्षा तथा ज्ञान विज्ञान के अध्ययन आधारित वर्नाक्यूलर प्राथमिक शालाओं की स्थापना से शिक्षा प्रबंध के आरंभ का इतिहास प्रारंभ होता है। रियासत में सर्वप्रथम विद्यालय सन् 1886 ईस्वी में प्राथमिक स्टेट प्रबंध के संरक्षण में सन् 1886 ईस्वी में प्रारंभ हुआ व ब्रिटिश कालीन भारत में अधिकांश देशी रियासतों में शिक्षा की स्थिति दयनीय थी। संख्या एवं गुण दोनों दृष्टिकोण से हालात अच्छी नहीं थी। बस्तर अंचल की भी यही दुर्दशा थी। सन् 1862 ईस्वी में अपर गोदावरी डिस्ट्रिक्ट के डिप्टी कमिश्नर सी ग्लासफर्ड को बस्तर के बारे में पूर्ण रिपोर्ट देने को कहा। सी. ग्लासफर्ड ने बस्तर की शिक्षा की स्थिति के बारे में कहा था, ''पूरे बस्तर में नाम के लिए भी स्कूल नहीं है। शिक्षा के इतिहास में राजा भैरवदेव का शासनकाल विशेष महत्व रखता है। चारों ओर अज्ञानता का सामाज्य है, दीवान का ध्यान इस ओर आकृष्ट करने पर भी उन्होंने कोई उत्सकुता नहीं दिखाई थी।''

किन्तु सन् 1886 ईस्वी में बस्तर में तीन स्कूल खोले गए। मुसलमानों की शिक्षा के लिए अरबी माध्यम का एक स्कूल, उड़िया

**प्राचार्य एवं प्राध्यापक ( इतिहास ), बस्तर विश्वविद्यालय, जगदलपुर ( छत्तीसगढ़ )*
***शोधार्थी ( इतिहास विभाग ), बस्तर विश्वविद्यालय, जगदलपुर ( छत्तीसगढ़ )*

लोगों के बच्चों के लिए उड़िया माध्यम के एक स्कूल। इस स्कूल के साथ तीन कक्षाएँ आरंभ की गई थी। इन स्कूलों में 80 छात्र अध्ययनरत थे, सन् 1896 ईस्वी में 15 नये स्कूल खोले गये, जिसमें छात्राओं की संख्या 2252 हो गई । इसी बीच एक मीडिल स्कूल भी खुल गया। सन् 1897 ईस्वी तक स्कूलों की संख्या 58 हो गयी तथा छात्रों की संख्या बढ़कर 2627 तक पहुँच गयी।

सन् 1910 ईस्वी में बस्तर में हुए जनजाति संघर्ष ने शिक्षा के विकास को काफी अवरूद्ध किया, क्योंकि इस विद्रोह में बस्तर के स्थिति 60 स्कूलों में से 45 स्कूल जला दिए गए, जिससे स्कूलों की संख्या घटकर 15 रह गयी एवं छात्रों की संख्या में अत्यंत कमी हो गई तथा समय बीतता गया धीरे–धीरे स्कूलों में छात्रों एवं शिक्षकों की संख्या में वृद्धि होती गयी।

स्वाधीनता के पश्चात बस्तर रियासत में विद्यालयों की कुल संख्या 58 थी। इस प्रकार सन् 1910 ईस्वी तक शिक्षा का जो विकास हुआ था, वह बाद 37 वर्षों में नहीं हो पाया। जैसा कि इन वर्षों में विद्यालयों की संख्या में अन्तर स्पष्ट हो जाता है। सन् 1910 ईस्वी में इनकी संख्या 60 थी, जो सन् 1947 ईस्वी में बढ़कर 85 हो गयी।

ब्रिटिश कालीन भारत को अपेक्षा स्वाधीन भारत में निश्चित रूप से शिक्षा के क्षेत्र में वृद्धि हुई। प्राथमिक विद्यालयों की संख्या सन् 1989–90 में 3498 हो गयी, जो कि सन् 1947 ईस्वी में 58 संख्या से लगभग 06 गुना अधिक है। माध्यमिक शालाये भी 601 हो गयी। उच्चतर माध्यमिक शाला जो कि पहले सिर्फ एक थी, वह बढ़कर 110 हो गई।

सरकारी आकड़ों के अनुसार अधिकांश गाँवों में विद्यालय स्थापित हो जाने से अंचल का विकास हुआ। नई आस्थाएँ व व्यवस्थाएँ शिक्षकों के द्वारा ज्ञान व महत्ताओं को अवगत कराया गया, जिससे मानव का सर्वागीण विकास में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जिससे जनजाति बालक विद्या अध्ययन करके अपने समुदाय को राष्ट्र विकास की मुख्य धारा में जुड़ने का प्रयास कराता है।

**निष्कर्ष :**

बस्तर रियासत जो कि जनजातीय आबादी बहुल पराधीन जनजातीय कृषक शिष्य सामुदायिक जातियों का क्षेत्र था। उसमें शिक्षा का प्रबंध ब्रिटिश प्रबंध की जरूरतों रियासती प्रबंधन की परिस्थितियों एवं सामाजार्थिक–सामुदायिक शिक्षा के प्रति लोक रूचि की क्रिया–प्रतिक्रिया के परिवेश में स्थापित एवं संचालित किया जाता रहा। जिसकी व्यवस्था में 19 वीं सदी के अंतिम चरण तथा बीसवी सदी के प्रथम दशक तक शैक्षणिक आवश्यकताओं एवं अंतर्विरोधों के बीच संचालित हुआ। इसमें जहाँ एक ओर शिक्षा प्रबंध के प्रति ब्रिटिश अभिरूचि औपनिवेशिक थी, तो जनसमाज की प्रतिक्रिया औपनिवेशिक संरक्षण में सामंती व्यवस्था के प्रति क्षोभपूर्ण मिश्रित अभिव्यक्ति थी।

किन्तु सन 1912 के पश्चात सन् 1948 ईस्वी तक बस्तर में नवप्रबुद्ध चेतना के आरंभ के साथ धीमे–धीमे शिक्षण संस्थाएँ ग्राम्य कस्बों के आवश्यक मानी जाने वाली तथा माझी मुखिये मालगुजार घरानों के जनजातीय लोग रूचि रखने लगे, जिससे शिक्षा के विकास में एतिहासिक अभिरूचि शनैः– शनैः बढ़ी थी। सन् 1938 ईस्वी से सन् 1948 ईस्वी के दशक में रियासत के बड़े कस्बों में स्कूलों की संख्या लोक सामुदायिक इलाकों में रियासती प्रबंध के अनुदार कठोर आवरण में शिक्षा के प्रति ललक की प्रतिध्वनि परिलक्षित होने लगी थी, जिसका प्रभाव लोक चेतना के स्थानीय जनमानस से विकास से संबंधित कारा एवं प्रभाव दोनों ही माना जा सकता है।

***संदर्भ :***


*(1) एडमिनी स्ट्रेशन रिपोर्ट ऑफ बस्तर फार द ईयर 1896.*

***(2)*** *बघेल, विजय कुमार (2017) : छत्तीसगढ़ की मुरिया जनजाति का सामाजिक सांस्कृतिक इतिहास, शताक्षी प्रकाशन रायपुर, पृष्ठ 155–172.*

***(3)*** *उक्त, पृष्ठ 156.*

***(4)*** *उक्त, पृष्ठ 156.*

***(5)*** *उक्त, पृष्ठ 157.*

***(6)*** *बस्तर जिला गजेटियर (भोपाल, 1998)।*

***(7)*** *बेहार, रामकुमार (1995) : बस्तर एक अध्ययन, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, पृष्ठ 48.*

***(8)*** *पूर्वोक्त, पृष्ठ 68.*

***(9)*** *रायपुर जिला गजेटियर (1978)।*

***(10)*** *राजस्व विभाग (स्टेट बस्तर) का मेमोरेण्डम 41 बी.ए. (बस्तर स्टेट) रेवेन्यू 190, 25 अगस्त 1990.*

***(11)*** *उक्त।*

***(12)*** *उक्त।*

***(13)*** *कमिश्नर, (बन्दोबस्त शाखा) बस्तर डिस्ट्रिक्ट बन्दोबस्त (म.प्र.) क्रमांक 2155–2168–ग्वालियर दिनांक 03/11/1990.*

***(14)*** *वार्ल्यानी, जीयंत राय तथा साहसी, वी.डी. (1998) : बस्तर कांकेर का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, दिव्या प्रकाशन, कांकेर जिला–बस्तर (मध्यप्रदेश) पृष्ठ 100–145.*


❁❁